REVIEW OF RESEARCH

भारत–श्रीलंका संबंध : मजबूत होता रिश्तों का धागा

मधु गुप्ता

अतिथि प्रवक्ता (राजनीति शास्त्र विभाग)
मुक्त शिक्षा विद्यालय , दिल्ली विश्वविद्यालय.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सार

पिछले एक दशक में भारत श्रीलंका सम्बन्धों को काफी नुकसान पंहुचा इसके लिए मनमोहन सरकर की मजबूरिया जिम्मेदार थी जो श्रीलंका –नीति को तमिल पार्टीयों के प्रभाव से मुक्त नहीं रख सकीं। यद्यपि भारत श्रीलंका के द्विपक्षीय सम्बन्ध साधारणतया मधुर रहे है तथापि श्रीलंका में जारी तमिल–समस्या के कारण दोनों के रिश्तो में खटास भी आई। श्रीलंका में भारतीय शांति सेना की उपस्थिति और लिट्टे द्वारा राजीव गाँधी की हत्या के परिणामस्वरूप भारत–श्रीलंका के सम्बन्धों को बहुत क्षति पहुंची। श्रीलंका सरकार द्वारा लिट्टे के विरुद्ध की गई निर्णायक कार्यवाही ने एक ओर श्रीलंका को चीन के करीब ला दिया तो दूसरी ओर क्षेत्रीय राजनीति के प्रभाव के कारण भारत –श्रीलंका सम्बन्धों में ठंडापन आ गया। इस परिस्थिति का लाभ उठाकर चीन ने श्रीलंका के साथ काफी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित कर लिए। श्रीलंका में चीन की उपस्थिति से भारत की सुरक्षा को खतरा है। असल में, भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी स्थिति मजबूत करने और हिन्द महासागर में अपना वर्चस्व बढ़ाने के उद्देश्य से चीन समुद्री रे''म मार्ग परियोजना साकार करना चाहता है। हिन्द महासागर में स्थित होने के कारण श्रीलंका इस परियोजना में चीन का सहयोगी बन सकता है। वर्तमान समय में भारत के साथ–साथ श्रीलंका में भी नेतृत्व परिवर्तन हुआ है। श्रीलंकाई नेतृत्व श्रीलंका में चीन के बढ़ते प्रभाव को सीमित करना चाहता है तो भारत भी क्षेत्रीयता की छाया से मुक्त होकर श्रीलंका के साथ अपने सम्बन्धों को प्राथमिकता देना चाहता है ताकि हिन्द महासागर में चीन के प्रभाव को कम किया जा सकें।

शब्द–कुंजी:– इंदिरा सिद्धांत, कूटनीतिक–परिधि, शक्ति सरंचना, नृजातीयता–समस्या, लिट्टे, समुद्री रेशम मार्ग, स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल

परिचय

हिन्द महासागर में भारत के निकट होने के कारण सैनिक और सामरिक दृष्टि से श्रीलंका का भारत के लिए अत्याधिक महत्व है। भारत और श्रीलंका के सांस्कृतिक संबंध सदियो पुराने है। भारतीय सम्राट अ''ोक ने श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार करवाया। आज भी श्रीलंका की अधिकांश जनसंख्या बौद्ध धर्म की अनुयायी हैं। सांस्कृतिक संबंधो तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर समान विचारों के कारण दोनों दे''ों के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास हुआ। श्रीलंका ने भारत के समान ही गुटनिरपेक्षता–नीति का अनुसरण किया। भारत–श्रीलंका दोनों ने हिंदमहासागर मे पश्चिमी प्रभाव को कम करने के लिए सहयोग पर सहमति जताई। भारत श्रीलंका के मध्य लंबे समय तक मैत्रीपूर्ण संबंध बने रहे। भारत तथा श्रीलंका ने स्वेज–संकट, लेबनान–संकट, जार्डन–संकट तथा कॉगो–संकट के समय एक–समान नीति अपनाई। 1961 में श्रीलंका ने भारत द्वारा गोवा–मुक्ति का समर्थन किया। भारत ने समय–समय पर श्रीलंका को आर्थिक सहायता प्रदान की। भारत–श्रीलंका के आपसी संबंधों में तनाव भी उत्पन्न हुआ। श्रीलंका सरकार ने 'सीलोन नागरिकता अधिनियम' द्वारा भारतीय प्रवासी श्रमिकों को नागरिक अधिकारों से पूर्णतया वंचित कर दिया। भारत ने

इस समस्या के समाधान के लिए 1954 तथा 1964 में प्रयास किए जो असफल रहें। अन्ततः 1974 में श्रीमती गांधी तथा श्रीमती भंडारनायके के बीच हुए समझौते द्वारा भारत मूल के निवासियों की समस्या का शांतिपूर्ण समाधान हो गया। इसके अलावा भारत एवम् श्रीलंका के मध्य कच्छदीव नामक द्वीप के प्रश्न पर विवाद उत्पन्न हो गया। 1974 में भारत ने इस द्वीप पर श्रीलंका की सम्प्रभुता को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार यह विवाद भी समाप्त हो गया।

''1990 के दशक में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीतियॉ अपनाई। 1998 के परमाणु तथा मिसाइल परीक्षण, विदेशी मुद्रा के भण्डार में वृद्धि, विदेशी व्यापार तथा आर्थिक विकास में वृद्धि और विश्व के सबसे बडे लोकतन्त्र के राजनीतिक स्थायित्व पर वैश्विक सहमति ने भारत को दक्षिण एशिया में उभरती शक्ति का स्थान दिया।''[1] उभरती शक्ति के रूप में भारत की भूमिका अपने पड़ोसियों के साथ नीतिगत स्तर पर सामंजस्य बैठाने की क्षमता पर निर्भर करती है विशेषतः श्रीलंका के साथ। पिछले दो दशकों में अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति सरंचना में भी परिवर्तन आए है। भारत– श्रीलंका के ''द्विपक्षीय संबंधों के इतिहास पर नजर डालें तो इन पर हमेशा विवादों का साया मंडराता रहा है। वर्ष 1980 के दशक में तमिलों से जुड़ा मुद्दा रिश्तों पर हावी रहा जबकि हाल ही में मछुआरों की धरपकड़ पर भी मतभेद सामने आए। निवेश के लिए श्रीलंका की चीन पर बढ़ती निर्भरता दोनों देशों के बीच संबंधों को प्रभावित करती रही।'' [2]

श्रीलंका की तमिल समस्या

भारत व श्रीलंका के संबंधों को प्रभावित करने वाले दो महत्त्वपूर्ण कारक है कि एक सुरक्षा और दूसरा कारक है दक्षिण भारत और श्रीलंका के उत्तर और पूर्वी भाग में रहने वाले तमिलों की नृजातीयता की समस्या। ''श्रीलंका में तमिल जनसंख्या है जिसके भावनात्मक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक सम्बन्ध भारतीय तमिलों से हैं। श्रीलंकाई तमिलों के लिए तमिलनाडु के लोगो में विशेष सहानुभूति है जिसे नई दिल्ली की कोई भी सरकार नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती विशेषतः आज की गठबंधन की राजनीति के माहौल में जहॉ क्षेत्रीय तमिल पार्टिओ का केंद्र सरकार पर काफी प्रभाव है।''[3]

श्रीलंकाई जातीय संघर्श का इतिहास

श्रीलंका में चार प्रमुख जातियॉ हैः सिंहली, श्रीलंकाई तमिल, भारतीय तमिल तथा शेष अन्य। सिंहली बहुमत में हैं जबकि तमिल अल्प होते हुए भी प्रभावशाली स्थिति रखते हैं। सिंहली समुदाय ने श्रीलंका के राजनितिक आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में एकाधिकार जमा लिया और तमिल हाशिए पर चले गए। तमिल असंतोष के अन्य कारण थेः–

1.अंग्रेजों ने 'फूट डालों और शासन करों' की नीति का अनुसरण करते हुए तमिल और सिंहलियों के बीच घृणा उत्पन्न कर दी।

2.सरकार ने नौकरियों तथा शिक्षण–संस्थाओं में प्रवेश में तमिलों के साथ भेदभावपूर्ण नीति अपनाई।

3.सरकार ने तमिल बहुत क्षेत्रों में सिंहलियों को बसाने के लिए प्रोत्साहित किया और तमिल जनसंख्या को यत्र–तत्र बिखेरने के प्रयास किया जिससे तमिल संगठित न हो सके।

4.1972 के नए संविधान में भी तमिलों की उपेक्षा करते हुए शासन–प्रशासन में उनकी भूमिका तथा अधिकारों को अत्यंत सीमित कर दिया।

5.सरकार ने सिंहली भाषा तथा बौद्ध धर्म को क्रमशः राष्ट्रीय भाषा तथा राष्ट्रीय धर्म घोषित कर दिया। इस घोषणा से तमिलों का आक्रोश चरम पर पहुॅच गया।

तमिलों ने तमिल भाषा को भी राष्ट्र भाषा घोषित किए जाने की मॉग रखी तथा आंदोलन प्रारंभ कर दिया। श्रीलंका सरकार ने इस आंदोलन को हिंसक तरीके से दबाने का प्रयत्न किया। धीरे–धीरे तमिलों में यह भावना उत्पन्न होने लगी कि हिंसा द्वारा ही वे अपने अधिकार प्राप्त कर सकतें हैं। तमिलों ने प्रभाकरण के नेतृत्व में 'तमिल युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट' लिट्टे नामक संगठन का निर्माण कर लिया। इस संगठन का उद्देश्य स्वतंत्र तमिल राष्ट्र की स्थापना करना था।

जातीय –संघर्श का भारत पर प्रभाव

1 श्रीलंकाई तमिलों के साथ हिंसा तथा दुर्व्यवहार के कारण भारतीय तमिलों की भावनाएँ आहत होती है और दक्षिण भारत की राजनीति पर गहरा असर पड़ता है।

2 जातीय हिंसा के परिणामस्वरूप लाखों लोग शरणार्थी के रूप में भारत आ गए।

3 इस हिंसा पर भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक है क्योंकि श्रीलंका ने तमिल–समस्या को कश्मीर–समस्या से जोडने का प्रयास किया।

4 श्रीलंका ने आरोप लगाया कि भारत ने लिट्टे को सहायता देकर उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया।

5 श्रीलंका द्वारा तमिल–समस्या के समाधान के लिए ब्रिटेन, अमरिका, पाकिस्तान से सहायता मांगना– ''उस तथाकथित इंदिरा सिंद्धांत के विरुद्ध था – जिसके अनुसार भारत किसी भी दक्षिण एशियाई राष्ट्र के संघर्ष की स्थिति में ऐसे किसी बाह्य हस्तक्षेप को सहन नहीं करेगा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारत विरोधी होगा। अतः किसी भी दक्षिण एशियाई सरकार को किसी भी अन्य राष्ट्र से ऐसा बाह्य सहयोग नहीं मांगना चाहिए जिसका झुकाव भारत विरोधी हो।''[4]

तमिल –समस्या के समाधान में भारत की भूमिका

यद्यपि भारत और श्रीलंका के बीच आर्थिक सम्बन्ध विकसित हुए तथापि तमिल –समस्या के कारण सम्बन्धों में कटुता बनी रही। श्रीलंका में 1956, 1958, 1977, 1981 और 1983 में तमिलों के विरूद्ध भीषण दंगे हुए। 1983 के दंगे इतने भयंकर थे कि श्रीलंका स्वयं आशंकित हो उठा कि भारत उसपर आक्रमण कर देगा। परन्तु तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने 'श्रीलंका से दूर रहने के' सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इसके साथ ही 1983, 1984 और 1985 में तमिल –समस्या के समाधान के लिए शिखर–वार्ताए आयोजित की गई जो असफल रहीं। 1987 में तमिल विद्रोहियों को खत्म करने के लिए श्रीलंका सरकार ने जाफना की आर्थिक नाकेबन्दी कर दी। तमिलों को चिकित्सा स्वास्थ्य जैसी मौलिक सुविधाओं से भी वंचित कर दिया गया। भारत ने इस जातीय संहार की कड़ी निंदा की। तमिलों से सहानुभूतिवश भारत ने राहत और खाद्य–सामग्री जाफना भेजी जिसे श्रीलंका सरकार ने रास्ते में ही रोक दिया। बाद में यह सामग्री विमानों द्वारा जाफना में गिराई गई। भारत की इस कार्यवाही से भारत –श्रीलंका के सम्बन्धों में दरार आ गई।

राष्ट्रपति जयर्वद्धने के कार्यकाल में तमिलों का संघर्ष चरम–सीमा तक पहुॅच गया। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने भारत का सहयोग मॉगा। परिणामस्वरूप राष्ट्रपति जयर्वद्धने और प्रधानमंत्री राजीव गांधी के बीच 1987 में समझौता हुआ जिसके अनुसार तमिल–समस्या को हल करने के लिए भारत ने शांति–सेना श्रीलंका भेजी। लेकिन भारतीय शांति–सेना श्रीलंका की समस्या हल नहीं कर सकी। ''भारत की इस कार्यवाही को बल प्रयोग द्वारा अपने पडोसी को अपने प्रभाव में रखने का प्रयत्न कहा गया तो दूसरी ओर इसके समर्थकों ने यह तर्क दिया कि यह मानवाधिकारों की रक्षा के लिए और मानवीय सहानुभूति के लिए एक अनिवार्य कदम था।''[5] जयवर्धने के बाद प्रेमदासा ने सत्ता ग्रहण करते ही भारत सरकार से आग्रह किया कि वह शांति सेना को वापस बुला ले। ''शांति सेना की वापसी का सबसे बुरा प्रभाव यह हुआ कि भारत की सैनिक असक्षमता पड़ोसियों और दुनिया के दूसरे देशों के सामने उजागर हो गई जिसकी परिणीति राजीव गाँधी की हत्या के रूप में हुई। धन– जन की हानि उठाने के बाद ऐसा करना भारत के लिए बेहद अपमानजनक था।''[6] शांति–सेना की वापसी के बाद श्रीलंकाई सेना और लिट्टे के बीच संघर्ष तीव्र हो गया। इसी दौरान 1991 में लिट्टे के मानव बम ने श्रीपेरम्बटूर में राजीव गांधी की हत्या कर दी। इस स्तब्धकारी घटना के बाद भारत –श्रीलंका के सम्बन्ध अत्यन्त तनावपूर्ण हो गए।

1995 में श्रीलंका के राष्ट्रपति की भारत यात्रा से दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध सामान्य हुए। अप्रैल 2000 में श्रीलंका में जातीय संघर्ष फिर तेज हो गया और लिट्टे ने सामरिक महत्व के एलिफेंट दर्रे पर अधिकार कर लिया। इस समय श्रीलंका ने भारत से हथियार और सैनिक हस्तक्षेप का आग्रह किया जिसे भारत ने ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप श्रीलंका सरकार ने पाकिस्तान, चीन और रूस से सैन्य सहायता मांगी। श्रीलंका सरकार के इस कदम ने भारत की सुरक्षा सम्बन्धी चिंताओं को बढ़ा दिया। मई 2000 में तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने श्रीलंका का दौरा किया और श्रीलंका को मानवीय सहायता के रूप में 10 करोड़ डॉलर के ऋण प्रस्ताव दिया। भारत ने यह स्पष्ट किया कि भारत श्रीलंका की एकता और अखंडता का समर्थन करता है और पृथक

तमिल राष्ट्र का विरोध करता है। भारत चाहता है कि आम तमिल नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए और उन्हें जीवन की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाए। भारत ने यह भी स्पष्ट किया कि श्रीलंका में किसी तीसरे देश की सेना की उपस्थिति भारतीय हितों के विरूद्ध है। श्रीलंका द्वारा अधिक से अधिक भागीदारी की विनती के बाद भी भारत ने श्रीलंका के मामले में सैन्य हस्तक्षेप से परहेज़ करते हुए क्षेत्र में अपनी प्रधानता बनाए रखने का प्रयत्न किया। अंततः नार्वे की मध्यस्थता से लिट्टे और श्रीलंका सरकार के बीच एक युद्ध–विराम समझौता फरवरी 2002 से प्रभावी हुआ जिसे भारत ने परोक्ष रूप से प्रभावित किया।

लिट्टे के विरूद्ध कार्रवाई – भारतीय दृष्टिकोण

युद्ध–विराम समझौता लागू होने के बावजूद लिट्टे और श्रीलंका सरकार के बीच हिंसक संघर्ष चलता रहा। 2005 में लिट्टे के प्रबल विरोधी महिन्द्रा राजपक्षे श्रीलंका के प्रधानमंत्री बने। इन्होने जातीय समस्या के सैन्य समाधान पर बल दिया। 2008 में लिट्टे ने एक स्कूली बस को बम से नष्ट कर दिया। इसके परिणामस्वरूप श्रीलंका सरकार ने युद्ध–विराम समझौता तोड़ते हुए उत्तरी प्रान्त में लिट्टे के खिलाफ सैनिक कार्यवाही शुरू कर दी। इस समय तक अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितिया भी बदल चुकी थी। लिट्टे को विभिन्न देशों से मिलने वाली आर्थिक सहायता बंद हो गई थी क्योकि 9/11 के हमले के बाद अमरीका ने लिट्टे को आतंकवादी संगठन घोषित कर दिया। अमरीका को शक था कि लिट्टे के सम्बन्ध इस्लामी आतंकवादियों से हो सकते है। दूसरी ओर राजीव गांधी के हत्या के बाद लिट्टे भारत की सहानुभूति भी खो चुका था। इन परिस्थितियों का फायदा उठाकर श्रीलंका सरकार ने लिट्टे के खिलाफ सैनिक–अभियान छेड़ दिया। श्रीलंका सरकार की इस कार्यवाही से जान–माल की बहुत हानि हुई। तमिल विद्रोहियों की आर्थिक नाकेबन्दी के कारण आम तमिल नागरिक भी जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो गए। लिट्टे के प्रभाव–क्षेत्र में रह रहे तमिलों के पुर्नवास–पुर्नस्थापना की चुनौती खड़ी हो गई।

श्रीलंका सेना और लिट्टे के बीच तीन दशक से चल रहा सैनिक संघर्ष अंततः तमिल नेता विलुपिल्लै प्रभाकरन की मृत्यु के साथ मई 2009 को समाप्त हो गया। "तमिल नेता विलुपिल्लै प्रभाकरन की मृत्यु के बाद भारत के तमिलनाडु राज्य में जिस तरह हिंसा भड़की वह इस बात को रेखांकित करता है कि नई दिल्ली को इसे संतुलित करने के लिए आगे कार्यवाही करनी पड़ेगी।"[7] एम करूणानिधि ने केंद्र सरकार पर दवाब बनाया कि वह मानवाधिकारों के मुद्दे पर श्रीलंका के विरुद्ध अमरीकी सरकार के प्रस्ताव का समर्थन करे लेकिन भारत सरकार ने अपने पडोसी देश के आंतरिक मामलो में हस्तक्षेप न करने का फैसला किया। इस संघर्ष में "भारतीय नीति निर्माताओं ने अनिवार्य रूप से एक दो आयामी नीति का पालन किया– जातीय संघर्ष के लिए राजनितिक समाधान खोजना और यह सुनिश्चित करना कि लिट्टे एक अलग तमिल ईलम का निर्माण न कर पाए।"[8] साथ ही भारत ने श्रीलंका के तमिल नागरिको की दुर्दशा पर भी चिंता व्यक्त की। भारत का मत है कि नृजातीय मुद्दे को ऐसे समझौते के माध्यम से सुलझाया जाये जो श्रीलंका के सभी समुदायों को समान नागरिकता अधिकार और सम्मान प्रदान करने में सक्षम हों।

भारत की चिंता : श्रीलंका –चीन की मित्रता

श्रीलका सरकार और लिट्टे के बीच चले जातीय संघर्ष ने भारत श्रीलंका के रिश्तो को गहराई से प्रभावित किया। तत्कालीन भारतीय नेतृत्व अपनी श्रीलंका नीति को स्थानीय तमिल नेताओ के प्रभाव से मुक्त नहीं रख सका। "मनमोहन सरकार को यूपीए में शामिल तमिल पार्टियों को खुश रखने के लिए कई बार अपने हाथ खींचने पडे। यहां तक कि नवंबर 2013, में कोलंबो में हुए राष्ट्रमंडल देशों के प्रमुखों की बैठक में भारत ने हिस्सा नहीं लिया था।"[9] श्रीलंका ने लिट्टे का सामना करने के लिए आधुनिक हथियारों की आपूर्ति के लिए भारत से सहायता मांगी। लेकिन भारत ने मदद करने से इंकार कर दिया। पश्चिमी देशों ने श्रीलंका पर मानवाधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाया। ऐसे समय में चीन ने श्रीलंका की सहायता की। 2007 में श्रीलंका और चीन ने 3.7 करोड़ डॉलर के समझौते पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते के अनुसार चीन ने लिट्टे का मुकाबला करने के लिए श्रीलंका की नौसेना को हथियार और लड़ाकू जेट विमानों की आपूर्ति की थी।

पिछले कुछ वर्षो में चीन और श्रीलंका के बीच द्विपक्षीय व्यापार दोगुना हो गया है। चीन अपने आर्थिक विकास के लिए महत्वाकांक्षी योजना वन बेल्ट वन रोड को साकार करना चाहता है ताकि वह विश्व के

अधिकांश देशो तक अपनी पहुंच आसान बना सके। इस योजना के अंतर्गत दो प्रोजेक्ट प्रस्तावित है– पहला सिल्क रोड इकनोमिक बेल्ट, दूसरा मेरीटाइम सिल्क रोड परियोजना। एक ओर हिन्द महासागर में श्रीलंका की अवस्थिति भारत की सुरक्षा सम्बन्धी चिंताओं से जुडी है तो दूसरी तरफ श्रीलंका सामरिक दृष्टि से चीन के मेरीटाइम सिल्क रोड परियोजना के मध्य में स्थित है। ''श्रीलंका की यह रणनीतिक स्थिति हिंद महासागर में एक व्यापार केंद्र के रूप में देश को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करती है। इसी विचार के साथ श्रीलंका ने चीन की ओबीओआर पहल का समर्थन करने का वचन दिया है। ओबीओआर पहल के साथ निकटता से जुड़े, चीन ने श्रीलंका के बुनियादी ढांचे को विकसित करने में निवेश किया है और श्रीलंका के शीर्ष 5 निवेशकों में से एक के रूप में उभरा है। ओबीओआर पहल पर ध्यान देने से पूर्व एशिया और यूरोप समेत चीन और अन्य ओबीओआर साझेदार देशों के साथ व्यापार और निवेश संबंधों में और सुधार हो सकता है।''[10] वास्तविकता यह है कि ''चीन की भीमकाय अर्थव्यवस्था पूरी तरह प्रोडक्शन पर आधारित है। उसकी ऊर्जा जरूरतों का बहुत हिस्सा बड़ा हिंद महासागर के जरिए ही खाड़ी के देशों और अफ्रीकी देशों से आता है. यही नहीं उसके प्रॉडक्ट्स के आवागम का भी यही रास्ता है. जाहिर है चीन अपनी इकॉनमी के लिए बेहद जरूरी इस रास्ते पर श्रीलंका जैसे देश में अपने नौसैनिक अड्डे बनाने की जमीन तलाश रहा है या यूं कहें कि तलाश चुका है।''[11] टॉम मिलर ने चाइनाज़ एशियन ड्रीम्ज़ नाम की क़िताब में लिखा है कि चीन की वन बेल्ट–वन रोड योजना सिर्फ़ आर्थिक ही नहीं बल्कि राजनीतिक और सामरिक योजना भी है। इससे कई देशों में चीन की सीधी पहुंच हो जाएगी। ''चीनी नौसैनिक जहाजों और पनडुब्बियों की आवाजाही के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में 'बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव' (बीआरआई) और 'मेरी टाइम सिल्क रोड' (एमएसआर) परियोजनाएं और इनका संभावित 'दोहरा' प्रयोग न केवल भारत अपितु अमेरिका और अन्य देशों के लिए भी एक चुनौती बन सकता है।''[12] भारत का कहना है कि चीन बुनियादी ढांचे के विकास की आड़ में साम्राज्यवादी नीतियां अपना रहा है और श्रीलंका, पाकिस्तान और म्यांमार में बंदरगाहों का विकास करके भारत की घेराबंदी कर रहा है, और अपने सैनिक अड्डे स्थापित कर रहा है।

''श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति भारत के लिए बहुत अहम् है। यही वजह है कि चीन की निगाहें श्रीलंका में एक स्थाई मिलिट्री बेस बनाने पर टिकीं है। बीजिंग ने श्रीलंका में कई परियोजनाओं के लिए 7 अरब डॉलर के समझौते पर हाथ मिलाया है।''[13] इसमें विद्युत संयंत्रों का निर्माण, श्रीलंका रेलवे का आधुनिकरण, संचार उपग्रहों को छोड़ने में वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान किया जाना सम्मिलित है। चीन हम्बनटोटा विकास–क्षेत्र में 85 प्रतिशत से अधिक वित्त पोषण कर रहा है। इसमें अंतराष्ट्रीय कंटेनर पोर्ट, बन्करिंग प्रणाली, एक तेलशोधक कारखाना, अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा और अन्य सुविधाओं का विकास शामिल है। हम्बनटोटा बंदरगाह का प्रयोग श्रीलंका की नौसेना के लिए ईंधन भरने और डॉकिंग स्टेशन के रूप में किया जाना है। चीन का श्रीलंका के हम्बनटोटा बंदरगाह पर पूर्ण नियंत्रण है। भारत को आशंका है कि भविष्य में इस बंदरगाह प्रयोग सामरिक उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। ''चीन के लिए हम्बनटोटा बंदरगाह जनरल कार्गो और तेल की ढुलाई के लिए न केवल सुगम और महत्वपूर्ण ट्रांजिट के रूप में काम करेगा बल्कि इस बंदरगाह से चीन को भारत के विरुद्ध गुप्त सूचना एकत्रित करने और निगरानी रखने में भी सुविधा होगी।''[14] यद्यपि दोनों देशो का कहना है कि इस परियोजना का उद्देश्य वाणिज्यिक है तथापि ''भारतीय विश्लेषक इस योजना को दोहरे उपयोग के उद्देश्य वाली परियोजना के रूप में देखते हुए इसे कोलम्बो और बीजिंग के बीच बढ़ते सामरिक सम्बन्धों का सपष्ट संकेत बताते है।''[15] इसके अलावा चीन कोलंबो पोर्ट के दक्षिण कंटेनर टर्मिनल का निर्माण और संचालन कर रहा है और कोलंबो में क़रीब डेढ़ बिलियन डालर के निवेश से होटल, जहाज़, मोटर रेसिंग ट्रैक बना रहा है। इस निवेश से चीन अपने सामरिक और कूटनीतिक हित भी साध सकता है।

महिंद्रा राजपक्षे के कार्यकाल में चीन ने श्रीलंका में अपनी उपस्थिति को मजबूत बनाने में सफलता प्राप्त कर ली। श्रीलंका में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए चिंता का विषय है। चीन की श्रीलंका में बढ़ती रूचि का कारण है – भारतीय नौसेना की घेराबंदी करना और 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल'[16] की नीति के माध्यम से हिन्द महासागर में अपना वर्चस्व स्थापित करना। ''हिंद महासागर में सुरक्षा संबंधी रणनीतिक व्यवस्था के लिहाज से श्रीलंका चीन के लिए बेहद महत्वपूर्ण हो सकता है। यह पास के नौवहन मांगो' के लिए न सिर्फ सुरक्षा आश्वासन देगा बल्कि यह 21वीं सदी के समुद्री रेश्म मार्ग (एमएसआर) को भी प्रोत्साहन देगा। भारत ने अब तक इस मार्ग का समर्थन नहीं किया है क्योंकि उसे चिंता है कि इसके चलते चीन हिंद महासागर में हावी हो

सकता है।[17] वास्तव में, 'दक्षिण एशिया में ''भारत से चौकस देशों'' को सहायता प्रदान करना और भारत की घेराबंदी करना लंबे समय से चीन की रणनीतिक चाल का अभिन्न अंग है।'[18] चीन– श्रीलंका की रणनीतिक मित्रता ने भारत की सुरक्षा संबंधी चिन्ताओं को बढ़ा दिया है।

नया नेतृत्व नया आगाज़

2014–15 भारत और श्रीलंका में सत्ता परिवर्तन हुआ। इससे द्विपक्षीय संबंधों में नवीन शुरुआत हुई। भारत के प्रधानमंत्री मोदी ''इस बात को अच्छी तरह से जानते है कि देश को विकास पथ पर ले जाना है तो महाशक्तियों के साथ –साथ पडोसी देशों के साथ भी सम्बन्ध मधुर बनाना होगा। इसी दूरगामी नीति के अंतर्गत उन्होंने 2014 में अपने शपथ– ग्रहण समारोह में दक्षिण एशियाई देशों के राष्ट्र अध्यक्षों को आमंत्रित किया।''[19] जिसमें श्रीलंका भी शामिल था। इससे मोदी ने यह सन्देश दिया कि अब श्रीलंका के साथ सम्बन्धों को तमिल पार्टिया प्रभावित नहीं कर सकेगी। दूसरी ओर श्रीलंकाई राष्ट्रपति सिरीसेना मैत्रिपाला भी भारत के साथ बेहतर संबंध बनाने की ओर लगातार अग्रसर हैं। इसी संदर्भ में सत्ता पर काबिज होने के पश्चात राष्ट्रपति सिरीसेना ने सर्वप्रथम विदेश यात्रा हेतु भारत को चुना। राष्ट्रपति सिरिसेना की 15–16 फरवरी, 2015 की भारत यात्रा के दौरान भारत श्रीलंका के बीच कृषि एवं बागवानी तथा सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाने से सम्बंधित कई समझौते हुए। इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण 'परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोग में सहयोग हेतु' समझौता था। श्रीलंका द्वारा किसी देश के साथ किया गया यह पहला समझौता है। प्रधानमंत्री मोदी ने 'पडोसी –प्रथम' नीति के अंतर्गत 13–14 मार्च, 2015 को श्रीलंका की यात्रा की। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1987 के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली श्रीलंका यात्रा है। इस यात्रा के दौरान मोदीजी ने श्रीलंका की संसद को सम्बोधित किया। इस यात्रा के परिणामस्वरूप चार समझौते हुए– राजनियक और आधिकारिक पासपोर्ट धारकों को वीसा छूट, युवा– विकास, सीमा शुल्क में आपसी सहायता एवं सहयोग पर समझौता और रूहुना विश्वविद्यालय में रविंद्रनाथ टैगोर सभागार की स्थापना। इसके अलावा श्रीलंका में रेल–विकास के लिए 318 मिलियन डॉलर ऋण उपलब्ध कराने तथा नई दिल्ली से कोलंबो के बीच सीधी विमान सेवा शुरू करने पर भी सहमति बनी।

मई, 2017 में संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में वैसाख पूर्णिमा के अवसर पर श्रीलंका मे अंतराष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित किया गया जिसमे प्रधानमंत्री मोदी मुख्य अतिथि थे इस सम्मलेन में 'उन्होंने हिन्दू और बौद्ध धर्म के बीच साम्यता स्थापित करने का प्रयास किया। जो संकेत था कि मोदीजी श्रीलंका के साथ धर्म आधारित कूटनीति आरम्भ करना चाहते है। इससे पूर्व धार्मिक मुद्दे कूटनीतिक परिधि में नहीं आते थे।'[20] बौद्ध धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान भारत में है इस कारण भारत श्रीलंका के बीच धार्मिक पर्यटन बढ़ाने के उद्देश्य से श्रीलंका से वाराणसी तक सीधी विमान सेवा शुरू की गई। मोदी जी ने श्रीलंका के विकास और पुनःनिर्माण में भी सहायता देने का वचन दिया। श्रीलंका सरकार की प्राथमिकताओं और उनसे मंत्रणा के आधार पर विकास से संबंधित अनेक परियोजनाओं की पहचान एवं उनका क्रियान्वयन किया गया जैसेः– दिकोयाजिला अस्पताल का निर्माण, आधुनिक चिकित्सा उपकरण मुहैया कराना, आपातकालीन एम्बुलेंस सेवा, अम्पारा में महिला सामुदायिक शिक्षण केंद्र की स्थापना, थिरुकेतीस्वरन मंदिर का पुरूद्धार, आतंरिक विस्थापित लोगों के पुनर्वास के लिए आवासों के मरम्मत एवं निर्माण कार्य शामिल हैं। पिछले वर्ष भारत सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन कनेक्टिविटी, छोटे और मध्य उद्यम विकास और प्रशिक्षण के क्षेत्रों में कई लघु विकास परियोजनाएं शुरू की है। इसके अलावा और भी कई प्रोजेक्ट हैं, जिन्हें भारत वहॉ शुरू करने वाला है, जैसे–त्रिंकोमाली ऑयल टैंक फार्म्स, जाफना में पलाली एयरपोर्ट, हंबनटोटा में मट्टाला एयरपोर्ट, कोलंबो बंदरगाह के पूर्वी कंटेनर टर्मिनल का निर्माण और कोलंबो के पास एलएनजी टर्मिनल का निर्माण। अभी हाल में भारतीय कम्पनियों को श्रीलंका में हाउसिंग प्रोजेक्ट का ठेका मिला है, जो पहले चीनी कम्पनियों के पास था। भारत के ॲकार्ड समूह और ओमान के तेल मंत्रालय ने 3.85 अरब डालर के निवेश से श्रीलंका में रिफाइनरी लगाने की घोषणा की है। भारत और श्रीलंका के बीच मजबूत होते आर्थिक–रणनीतिक रिश्तों के परिणामस्वरूप भारत हिन्द महासागर में चीन की चुनौती का सामना कर अपने सामरिक हितों की रक्षा कर सकता है।

निष्कर्ष

भारत श्रीलंका के मध्य संबंध मुख्यतः दो तत्वों पर निर्भर करेंगें– पहला तमिल–समस्या का उचित और न्यायपूर्ण समाधान और दूसरा भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताए। मधुर द्विपक्षीय सम्बन्धों के लिए भारत ने श्रीलंका के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई तथापि भारत चाहता है कि श्रीलंका सरकार तमिल–समस्या का उचित एवं न्यायपूर्ण समाधान करें ताकि तमिलों को समान नागरिक अधिकार और सम्मान मिल सकें। भारत श्रीलंका के गृहयुद्ध में विस्थापित हुए तमिलों के पुनर्वास में सहायता कर रहा है और श्रीलंका के पुननिर्माण में हरसंभव सहयोग कर रहा है तथापि भारत पडोसी देशों की आर्थिक सहायता करने में चीन का मुकाबला नहीं कर सकता। इसीलिए मोदीजी ने भारत–श्रीलंका सम्बन्धों में नई ऊर्जा का संचार करने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक रणनीति भी अपनाई। इस रणनीति के परिणामस्वरूप श्रीलंका में भारत के प्रति सकारात्मक वातावरण बना है। 2016 में उरी आतंकवादी हमले के विरोध में श्रीलंका ने पाकिस्तान में आयोजित होने वाले सार्क सम्मलेन का बहिष्कार करके भारत का समर्थन किया। भारत ने हिन्द महासागर में चीन की उपस्थिति से उत्पन्न अपनी सुरक्षा–सम्बन्धी चिंताओं से श्रीलंका को आगाह किया है। श्रीलंका ने यह आश्वासन दिया है कि श्रीलंका के लिए भारत 'प्रथम प्राथमिकता' बना रहेगा। वास्तव में श्रीलंका ने चीन के कर्ज वाली परियोजनाओं को मंजूरी देकर अदूरदर्शिरता का परिचय दिया। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट का कहना है कि चीन क़र्ज़ को रणनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है। अपनी महत्वाकांक्षी योजना 'वन बेल्ट वन रोड' को साकार करने के लिए आसपास के देशों को क़र्ज़ देकर चीन अपने आर्थिक हितों को साध रहा है। चीन के ऋण जाल में फंसने के कारण ही श्रीलंका को हम्बनटोटा बंदरगाह चीन को लीज पर देना पडा। इसका वहॉ के नागरिकों ने विरोध किया। मोदीजी के सत्ता में आने के बाद द्विपक्षीय यात्राओं और संवाद का यह सार्थक परिणाम निकला कि ''श्रीलंका ने भारत को भरोसा दिलाया कि हम्बनटोटा बंदरगाह पर भविष्य में चीन की पनडुब्बियों को ठहरने की अनुमति नहीं दी जाएगी।''[21] चीन और भारत के साथ संतुलन बनाने के प्रयास में श्रीलंका ने हम्बनटोटा बंदरगाह, त्रिंकोमली पोर्ट और कोलंबो बंदरगाह में भारत को निवेश का निमंत्रण दिया है। इससे भारत हिन्द महासागर में चीन को संतुलित कर सकेगा और चीन की स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल की नीति को भी साध सकेगा। भारत और श्रीलंका दोनों ही अतीत की छाया से मुक्त होकर द्विपक्षीय सम्बन्धों को नई ऊर्जा देने का प्रयास कर रहे है ताकि दोनों देशों के मध्य सह अस्तित्व, सहयोग और सहभागिता पर आधारित मजबूत सम्बन्ध विकसित हो सकें।

संदर्भ सूची

[1] मधुमिता ''बदलते वैश्विक सामरिक परिप्रेक्षय में भारत'', समकालीन भारत –एक परिचय, (सम्पा) मनोज सिन्हा, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैक स्वान 2012, पृ 357

[2]http://zeenews.india.com/hindi/world/india-sri-lanka-relations-had-improved-making-china-related-concerns-in-year-2016/313536 viewed on 29.8.2018

[3]राजीव सीकरी, भारत की विदेश नीतिः चुनौती और रणनीति, सैग पब्लिशिंग इंडिया 2017

[4] सुमित गांगुली, सम्पा भारत की विदेश नीति – पुनरावलोकन एवं संभावनाए,, नई दिल्ली, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 2018

[5] पुष्पेश पंत, इक्कीसवी शताब्दी में अंतराष्ट्रीय सम्बन्ध, पृ 213

[6] पुष्पेश पंत, भारत की विदेश नीति, टाटा मैक्ग्रॉ हिल, पृ 2.36

[7] हर्षवर्धन पंत, भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन 2012, पृ143

[8]डा सुधांशु त्रिपाठी ''भारत और उसके पडोसी देशः सुरक्षा चिंताओं के बीच प्रचुर चुनौतिआ'', वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2014 पृ 68

[9] https://www.bbc.com/hindi/india/2014/05/140526 vikas piece on saarc sn viewed on 12.4.2019

[10] https://www.colombotelegraph.com/index.php/one-belt-and-one-road-initiative-of-china-its-implications-in-sri-lanka/ viewed on 19-12-2018

[11] https://hindi.firstpost.com/world/is-srilanka-president-sirisena-ditching-indian-government-and-pm-modi-sd-156200.html viewed on 19-12-2018

[12] https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail-hi.htm?772 viewed on 12.4.2019

[13] m.jagran.com/news/national-chinese-strategy-to-stop-india-in-south-asia-15960332.html viewed on 14/5/2017

[14] हर्षवर्धन पंत, भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन 2012, पृ145

[15] डा भावना पोखरना ''भारत चीन सम्बन्धः नया नेतृत्व ताजा शुरुआत'', वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2014, पृ 86

[16] हिन्द महासागर में वर्चस्व स्थापित करने के उद्देश्य से चीन पाकिस्तान के ग्वादर से बंगाल की खाड़ी तक पांच पोर्ट बनाने की रणनीति पर काम कर रहा है। इसी रणनीति को स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल का नाम दिया गया है।

[17] https://navbharattimes.indiatimes.com/world/asian-countries/sri-lanka-vital-for-china-as-pakistans-security-calamitous-report/articleshow/51727415.cms viewed on 31.9.2018

[18] दलीप बाजिया, '' चीन–भारत सुरक्षा कश्मकशः एक मूल्यांकन'' वर्ल्ड फोक्स, अक्टूबर 2014, पृ 19

[19] रमेश कुमार दुबे, ''विदेश नीति;हर मोर्चे पर कामयाब दिख रही सरकार'', परिवर्तन की ओर, संपा अनंत विजय, शिवानंद द्विवेदी, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन 2018, पृ 147

20 राष्ट्रीय सहारा, 14 मई, 2017

[21] राष्ट्रीय सहारा, 14 मई, 2017

मधु गुप्ता
अतिथि प्रवक्ता (राजनीति शास्त्र विभाग) मुक्त शिक्षा विद्यालय , दिल्ली विश्वविद्यालय.

LBP PUBLICATION